सलासिल में बंटे हुए सुन्नी कब एक होंगे?

अ़ब्दे मुस्तफ़ा
मुह़म्मद साबिर क़ादरी

SABIYA
VIRTUAL PUBLICATION

सलासिल में बंटे हुए सुन्नी कब एक होंगे?

अ़ब्दे मुस्तफ़ा
मुहम्मद साबिर क़ादरी

SABIYA
VIRTUAL PUBLICATION

तफ़सीलात

नाम

सलासिल में बंटे हुए सुन्नी कब एक होंगे?

अज़ क़लम

अब्दे मुस्तफ़ा मुहम्मद साबिर क़ादरी

सना इशाअ़त

शाबान 1444 हिज़री
फ़रवरी 2023 ईसवी

कुल सफ़हात

23

हमारे डिज़ाइनिंग पार्टनर

PS graphics
PURE SUNNI GRAPHICS

नाशिर

SABIYA VIRTUAL PUBLICATION
SABIYA VIRTUAL PUBLICATION

AMO
POWERED BY ABDE MUSTAFA OFFICIAL

info@abdemustafa.com

© 2023 All Rights Reserved.

اللہ کے نام سے شروع جو نہایت مہربان، رحمت والا ہے۔

फ़ेहरिस्त

नाशिर की तरफ से कुछ अहम बातें 2
ये कैसी तक़सीम है? 4
इन इख़तिलाफ़ात ने हमारी कमर तोड़ डाली 4
मुजरिम किसे कहें? 5
दुनिया-दार उलमा 5
तन्ज़ीमों से दीन का नुक़्सान 8
दीन मगर तंज़ीमी शक्ल में, तंज़ीमी रंग में 9
सलासिल और तंज़ीम 10
एक अहम वज़ाहत 10
हालाते पीर साहिबान 11
पीर साहिबान के जज़बाती बयानात 11
अकाबिरीन ने दीन का काम कैसे किया 12
फिर उसी की ज़रूरत है 13
हमारी किताबें हिंदी में 16

नाशिर की तरफ से कुछ अहम बातें

मुख़्तलफ़ ममालिक से कई लिखने वाले हमें अपना सरमाया इरसाल फ़रमा रहे हैं जिन्हें हम शाया (Publish) कर रहे हैं, हम ये बताना जरूरी समझते हैं कि हमारी शाया करदा किताबों की मुंदरिजात (Contents) की ज़िम्मेदारी हम इस ह़द तक लेते हैं कि ये सब अहले सुन्नत व जमाअ़त से है और ये ज़ाहिर भी है कि हर लिखारी का ताल्लुक़ अहले सुन्नत से है, दूसरी जानिब अकाबिरीने अहले सुन्नत की जो किताबें शाया की जा रही हैं तो उन के मुताल्लिक़ कुछ कहने की हाजत ही नहीं। फिर बात आती है लफ्ज़ी और इमलाई ग़लतियों की, तो जो किताबें "टीम अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफिशियल" की पेशकश होती हैं उनके लिये हम ज़िम्मेदार हैं और वो किताबें जो मुख़्तलफ़ ज़राए से हमें मौसूल होती हैं, उन में इस तरह की ग़लतियों के हवाले से हम बरी हैं कि वहाँ हम हर हर लफ्ज़ की छान फटक नहीं करते और हमारा किरदार बस एक नाशिर का होता है।

ये भी मुम्किन है कि कई किताबों में ऐसी बातें भी हों जिन से हम इत्तिफ़ाक़ नहीं रखते, मिसाल के तौर पर किसी किताब में कोई ऐसी रिवायत भी हो सकती है कि तहक़ीक़ से जिसका झूटा होना अब साबित हो चुका है लेकिन उसे लिखने वाले ने अदमे तवज्जो की बिना पर नक़्ल कर दिया या किसी और वजह से वो किताब में आ गई जैसा कि अहले इल्म पर मख़फी नहीं कि कई वुजूहात की बिना पर ऐसा होता है, तो जैसा हमने अर्ज़ किया कि अगर्चे उसे हम शाया करते हैं लेकिन इससे ये ना समझा जाए कि हम उससे इत्तिफ़ाक़ भी करते हैं।

एक मिसाल और हम अहले सुन्नत के माबैन इख़्तिलाफ़ी मसाइल की पेश करना चाहते हैं कि कई मसाइल ऐसे हैं जिन में उलमा -ए- अहले सुन्नत का इख़्तिलाफ़ है और किसी एक अमल को कोई ह़राम कहता है

तो दूसरा उसके जवाज़ का क़ाइल है, ऐसे में जब हम एक नाशिर का किरदार अदा कर रहे हैं तो दोनों की किताबों को शाया करना हमारा काम है लेकिन हमारा मौकिफ़ क्या है, ये एक अलग बात है, हम फरीक़ैन की किताबों को इस बुनियाद पर शाया कर सकते हैं कि दोनो अहले सुन्नत से हैं और ये इख़्तिलाफ़ात फुरूई हैं।

इसी तरह हमने लफ़्ज़ी और इमलाई गलतियों का ज़िक्र किया था जिस में थोड़ी तफ़्सील ये भी मुलाहिज़ा फ़रमाएँ कि कई अल्फाज़ ऐसे हैं के जिन के तलफ़्फ़ुज़ और इमला में इख़्तिलाफ़ पाया जाता है, अब यहाँ भी कुछ ऐसी ही सूरत बनेगी कि हम अगर्चे किसी एक तरीक़े की सिह़्हत के क़ाइल हों लेकिन उसके ख़िलाफ़ भी हमारी इशाअत में मौजूद होगा, इस फ़र्क़ को बयान करना ज़रूरी था ताकि क़ारईन में से किसी को शुब्हा न रहे।

टीम अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल की इ़ल्मी, तहक़ीक़ी और इस्लाह़ी किताबें और रिसाले कई मराह़िल से गुजरने के बाद शाया होते हैं लेकिन इसके बावजूद इन में भी ऐसी ग़लतियों का पाया जाना मुम्किन है लिहाज़ा अगर आप उन्हें पाएँ तो हमें ज़रूर बताएँ ताकि उसकी तस्हीह़ की जा सके।

साबिया वर्चुअल पब्लिकेशन
SABIYA VIRTUAL PUBLICATION
POWERED BY ABDE MUSTAFA OFFICIAL

सलासिल में बंटे हुए सुन्नी कब एक होंगे?

ये कैसी तक़सीम है?

सलासिल के मा'ना तो जोड़ने के हैं फिर यहां तक़सीम की बात कहाँ से आ गई? अगर हम मानते हैं कि ये सलासिल अहले सुन्नत "में" हैं तो फिर हम बंटे हुए क्यों हैं? सलासिल की वजह से अहले सुन्नत का बंटवारा हो रहा है तो फिर ये मानना पड़ेगा कि सलासिल के नाम पर मन-मानी हो रही है। उसूलों को फ़रामोश कर के काम किया जा रहा है, जभी तो नताइज ऐसे हैं। काम ठीक से किया जाता तो सुन्नीयों के दरमयान इत्तिहाद होता मगर हाल ये है कि "काम" बटवारे की शक्ल इख़तियार कर रहा है। जिस चीज़ से इत्तिहाद होना चाहिए था, उस से इंतिशार हो रहा है तो फिर हमें सोचना चाहिए कि आख़िर ये कैसे हो रहा है और... आख़िर ये कैसी तक़सीम है?

इन इख़तिलाफ़ात ने हमारी कमर तोड़ डाली

एक तक़सीम तो उम्मते मुस्लिमा में फ़िर्क़ों की शक्ल में हुई। लोगों ने अहल सुन्नत के बुनियादी अक़ीदों से हट कर अक़ीदे बनाए और इस तरह कई फ़िरक़े वजूद में आ गए। इस से मुस्लमानों को बहुत ज़्यादा नुक़्सान पहुंचा। इन फ़िर्क़ों ने अपने बातिल नज़रियात को ख़ूब आम करना शुरू किया और इस से अहले सुन्नत के लिए जंग के कई महाज़ खुल गए। ये जंगें जारी ही थीं कि अब अहले सुन्नत के अंदर सलासिल के नाम पर बंटवारा शुरू हो गया। अहले सुन्नत को जो चैलेंजिज़ दरपेश थे वही कम नहीं थे कि अब अंदरूनी मुआमलात में लड़ाई झगड़ों का आग़ाज़ हो गया। इन इख़तिलाफ़ात ने हमारी कमर तोड़ डाली है। एक ऐसी फ़िज़ा क़ायम हो गई है कि जिधर नज़र करें, उधर मुख़ालिफ़त है। अगर कोई बड़ा काम हो

रहा होता है तो इन इख़तिलाफ़ात की वजह से रुक जाता है। अगर काम किसी तरह शुरू भी हो जाये तो ये आपस की नफ़रतें उसे तकमील तक पहुंचने नहीं देती। एक दूसरे से लड़ने में जो वक़्त बर्बाद किया जा रहा है वो वक़्त वापिस नहीं मिलने वाला और इसी वक़्त का फ़ायदा उठाने वाले, भरपूर फ़ायदा उठा रहे हैं। हमने आपस में ये सिलसिला शुरू कर के ग़ैरों को मौक़ा फ़राहम किया है। हमारे अंदर की ये कमज़ोरी हमें पस्ती की तरफ़ ले जा रही है। अब हमें चाहिए कि हम अपनी टूटी हुई कमर को मज़ीद टूटने से बचाएं और उसे तक़वियत पहुंचाने के लिए इख़लास के साथ काम करें।

मुजरिम किसे कहें?

ये जानना भी ज़रूरी है कि आख़िर कौन कौन अहले सुन्नत को बांटने के संगीन जुर्म में शामिल है। जब उनकी पहचान होगी तभी उनसे बचा जा सकता है वर्ना मुम्किन है कि हम भी मुजरिमों में शामिल हो जाएं। मुजरिमों की फ़हरिस्त तो लंबी है लिहाज़ा हम यहां "बड़े मुजरिमों" का ज़िक्र करेंगे कि इन्होंने ही बाक़ी छोटे मुजरिमों को जन्म दिया है। सबसे बड़े मुजरिम वो हैं जिन्हें मन्सब मिला और इन्होंने उस का ग़लत इस्तिमाल किया। एक साहिब-ए -मन्सब के ऐसा करने से बहुत फ़र्क़ पड़ता है। इस में दुनिया-दार उलमा, पीर साहिबान और सियासी क़ियादत करने वाले अफ़राद सब शामिल हैं। इन्होंने अपने मन्सब पर ज़ुल्म कर के अहले सुन्नत को इलमी, फ़िक्री और मुआशी तौर पर भी कमज़ोर किया है।

दुनिया-दार उलमा

एक आलिम लोगों के लिए मिसाल होता है कि जिसके तरीक़े को अपनाया जाये लेकिन अगर यही ख़िलाफे शरा काम करेंगे तो क्या होगा?

हक़ीक़तन देखा जाये तो ये आलिम होते भी नहीं, बस लोगों की नज़रों में आलिम बने फिरते हैं। ऐसे दुनिया-दार लोगों की वजह से अहले सुन्नत में बहुत इंतिशार बढ़ा है। ये लोग पहली बात तो जाहिल होते हैं और ऊपर से उन्हें ऐसा मन्सब भी दे दिया जाता है कि अवाम उन्ही की सुनती है और उनके मुक़ाबले में उलमा-ए-किराम की जल्दी सुनती भी नहीं।

हमारे मदारिस का हाल भी एक अलग उनवान है। बस रस्म अदा की जा रही है। फ़ारिग़-उत-तहसील हज़रात हों या वो जिन्होंने फ़राग़त मिलने से पहले ख़ुद को फ़ारिग़ कर लिया, दोनों का हाल एक जैसा नज़र आ रहा है। अपने नाम के साथ "अल्लामा, फ़हामा" तो शौक़ से लगाते हैं लेकिन किसी काम के नहीं हैं, उल्टा काम बढ़ाते हैं और अहले सुन्नत को नुक़्सान पहुंचाते हैं। उनकी हक़ीक़त बयान करने का मक़सद ये है कि लोग ऐसों को अच्छी तरह जान लें और उनसे दूर हो कर हक़ीक़ी उलमा की तरफ़ रुजू करें और जब ऐसा होगा तो इत्तिहाद यक़ीनी होता जाएगा। आज जो इख़तिलाफ़ात अहले सुन्नत के माबैन ऐसी सूरत इख़तियार कर चुके हैं तो इस में ऐसे दुनिया-दार उलमा का बहुत अहम किरदार है। इन्होंने फ़क़त अपने फ़ायदे के लिए और अपनी आराम की ज़िंदगी के लिए सुन्नीयों को आपस में लड़ाया है। हम ऐसे दुनिया-दार उलमा के बारे में थोड़ा और लिखेंगे ताकि बात मज़ीद वाज़ेह हो सके।

मदारिस से फ़राग़त हासिल करने वाले कहीं ना कहीं किसी दीनी मन्सब पर फ़ाइज़ हो जाते हैं लेकिन इस का हक़ अदा नहीं कर पाते। मसाजिद में इमामत करने वाले अक्सर का हाल देखें और बताएं कि ऐसे लोगों के होते हुए बेहतरी की कितनी उम्मीद की जा सकती है? उन्हें ठीक से नमाज़ पढ़ानी नहीं आती, दूसरे इल्मी और तहक़ीक़ी मसाइल तो बहुत दौर की

बात है। ऐसे लोग जुमा जुमा और फिर महाफ़िले मीलाद के नाम पर आए दिन तक़रीर के लिए खड़े होते हैं और जिन मौज़ूआत पर कलाम करने की सख़्त ज़रूरत है, उनसे कोसों दूर अपनी धुन में बयान कर के किसी तरह वक़्त गुज़ारते हैं और ज़बरदस्ती की वाह वाही के साथ पैसे लूट कर निकल लेते हैं। बेचारी क़ौम जो कि इल्म की प्यासी तो है लेकिन उनकी प्यास बुझाने वाले अपनी दुनिया में मगन हैं। अब ऐसी अवाम को जिन्हें हमने कोरा छोड़ दिया है, वो कब तक कोरा रहेगा? कभी भी कोई आकर इस पर कुछ भी लिख देगा और फिर बाद में इस का तदारुक मुश्किल होगा। अगर ख़वास और अवाम की ये हालत होगी तो सलासिल के नाम पर ही नहीं बल्कि किसी भी नाम को आड़ बना कर कोई भी अपना मतलब पूरा कर के निकल जाएगा।

मसाजिद के अइम्मा अगर अच्छे हों और अपने इलाक़े की ज़रूरत को समझ कर काम करें तो फिर कौन है जो वहां आकर सलासिल के नाम पर इंतिशार फैलाने में कामयाब होगा? अगर ख़तरे से पहले ही आगाह कर दिया जाये तो कई लोगों को ख़तरे से बचाया जा सकता है लेकिन ये आगाह करें भी तो कैसे, उन्हें ख़ुद की ख़बर नहीं है। एक आलिम तो फ़ित्ने में आते ही उसे पहचान लेता है और जाहिलों को तब पता चलता है जब वो जा रहा होता है। ऐसे ही ना जाने कितने फ़ित्ने आते हैं और हमारे सुन्नीयों को अपने साथ ले जाते हैं लेकिन मन्सब पर फ़ाइज़ ये हज़रात वही रट्टा मारते रहते हैं जो उन्हें बारह महीने के लिए सिखा दिया गया है।

अच्छा ये लोग जहां से आए हैं उधर चलते हैं यानी मदारिसे इस्लामीया कि जहां उलमा तैयार किए जाते हैं, दस्तार और सनद दी जाती है। जब हम उनकी तरफ़ देखते हैं तो ये नज़र आता है कि वहां भी कमियां ही कमियां

हैं, कोताहियां और लापरवाहीयां वाज़ेह नज़र आती हैं। फ़क़त सनद दे देना और दर्स-ए-निज़ामी में मौजूद किताबों को पढ़ा देना ही मदारिस का काम नहीं है। मदारिस में अफ़्क़ार की तामीर होनी चाहिए जो कि असल है। अगर अफ़्क़ार नहीं तो महज़ रटी हुई किताबों से सालाना इमतिहान में ही कामयाबी हासिल की जा सकती है, और इस से आगे कुछ दिखाई भी नहीं देगा क्यों कि अफ़्क़ार तो एक रस्म को अदा करने तक ही महदूद रह गए। जब मदारिस से ऐसे लोग बाहर आएँगे अवामे अहले सुन्नत की रहनुमाई करने के लिए तो क्या होगा? इस का अंदाज़ा लगाने की ज़रूरत नहीं क्यों कि मौजूदा हालात हमारे सामने हैं। ऐसी हालत में सलासिल के नाम पर बंटवारा होने से कौन रोकेगा? क्या ये अहले मन्सब इस फ़रीज़े को अंजाम दे पाएँगे? बिलकुल नहीं दे पाएँगे बल्कि इस बंटवारे में जहालत के सबब अपना हिस्सा भी शामिल कर बैठेंगे। इसी तरह वो पीर साहिबान और सियासी क़ाइदीन जिनके अफ़्क़ार में फ़क़त दुनियादारी है तो क्या वो मुस्लमानों को ऐसे बंटने से बचा पाएँगे? बल्कि उल्टा वो भी अपने फ़ायदे के लिए क़ौम को और बांट देंगे। और ये बिलकुल ज़ाहिर भी है कि आपने देखा होगा सियासत में आने वाले मुसलमानों के क्या हालात हैं और वो क़ौम को किस क़दर बांटने का काम कर रहे हैं। ये सब के सब मुजरिम हैं। उनके जुर्मों को गिनाते गिनाते उम्र गुज़र जाएगी पर मुकम्मल बयान ना हो पाएगा। आज जो हालात ऐसे हैं तो वो यूँही नहीं, बहुत गलतीयां हुई हैं तो उन हालात को हम पहुंचे हैं। इन मुजरिमों में एक और नाम शामिल है और वो है "तन्ज़ीमों का", जी हाँ, तंज़ीमें भी इस में शामिल हैं

तन्ज़ीमों से दीन का नुक़्सान

हम कुछ ऐसी बातों की तरफ़ तवज्जो दिलाना चाहते हैं जिन पर बहुत कम लोगों ने ग़ौर किया होगा। सब ये तो समझते ही हैं कि अहले सुन्नत में

जो हर दिन दस बीस तंज़ीमें बन रही हैं, उनसे सुन्नियत को फ़ायदा पहुंच रहा है लेकिन हम तस्वीर का एक दूसरा रुख भी आपके सामने रखना चाहते हैं। तन्ज़ीमों ने दीन का काम किया है लेकिन पहले तंज़ीम का काम किया है। इस जुमले पर ग़ौर करें। दीन का काम या तंज़ीम का काम? अगर दीन का काम ही करना है तो किसी भी तंज़ीम के लिए किया जा सकता है लेकिन "अपनी तंज़ीम का ही काम करना कैसा दीन का काम है? क्या हम ग़लत कह रहे हैं? क्या ऐसा नहीं है कि एक तंज़ीम से जुड़ने के बाद बंदा उसी का पाबंद हो कर रह जाता है? क्या तन्ज़ीमों को चलाने वाले ऐसे उसूल नहीं बना रहे हैं कि सिर्फ हमारी तंज़ीम के लिए और हमारे तरीक़े के मुताबिक़ ही काम किया जाये वर्ना आप इस तंज़ीम में काम नहीं कर सकते। बात सिर्फ इतनी ही नहीं है बल्कि इख़तिलाफ़ी मसाइल में भी इन तन्ज़ीमों ने यही रवैय्या अपनाया कि जो बानी-ए-तंज़ीम का मौक़िफ़ है वही हर रूक्न का हो वर्ना उस की यहां कोई जगह नहीं है। जिन्होंने इख़तिलाफ़ करने की कोशिश की उन्हें धक्के देकर निकालने का काम इन तन्ज़ीमों ने किया है।

दीन मगर तंज़ीमी शक्ल में, तंज़ीमी रंग में

इन तन्ज़ीमों ने दीन को तो पेश किया इस में कोई शक नहीं लेकिन एक तंज़ीमी रंग में और एक तंज़ीमी शक्ल देकर जिससे ऐसा तास्सुर मिलने लगा कि ये एक अलग गिरोह है और इस के ख़िलाफ़ करने वाले अलग और इस अलग अलग के चक्कर में सब कुछ अलग होना शुरू हो गया। अब हाल ये हो गया कि बंदा अल्लाह और इस के रसूल के ख़िलाफ़ सुनकर उतना जज़बाती नहीं होता जितना अपनी तंज़ीम के ख़िलाफ़ सुनकर हो जाता है। ये बातें हो सकता है कई लोगों को बुरी लगे लेकिन कभी इस पर ग़ौर ज़रूर करें। तन्ज़ीमों का काम ये नहीं था कि वो अहले सुन्नत के

अंदर गिरोह बना कर बटवारा करे लेकिन ऐसा हुआ और इतना तक हुआ कि कपड़े अलग हुए, बोल-चाल का तरीक़ा अलग हुआ, काम करने का तरीक़ा अलग हुआ, शहरों को ख़ासकर के पहचान बनाई जाने लगी और सबसे बड़ी बात कि लोगों की अक़ीदत को ग़लत रास्ता दिखा कर उनके साथ खिलवाड़ किया गया। दौर-ए-हाज़िर के एक बहुत बड़े मुहक़्क़िक़ आलिमे दीन से ये जुमला सुना कि "ये तंज़ीमें बनाना चौधवीं सदी की बिद्दत है फिर आगे इन्होंने बताया कि बुज़ुर्गों ने इस तरह काम नहीं किया, वो अहले सुन्नत के लिए काम करते थे और फिर ये भी कि अगरचे ये बुरी बिद्दत नहीं कि मुतल्लिक़न उसे मज़मूम क़रार दिया जाये लेकिन जो बातें तन्ज़ीमों में, उनके निज़ाम में आ गई हैं वो ज़रूर मज़म्मत के काबिल हैं।

सलासिल और तंज़ीम

सलासिल हों, तंज़ीमें हों, या दूसरे मसाइल हों कि जिनकी वजह से अहले सुन्नत में बंटवारे जैसी सूरत बन रही है तो सब मसाइल एक ही मौज़ू के तहत आते हैं और हम इसी मौज़ू पर कलाम कर रहे हैं। इन सब का आपस में गहरा ताल्लुक़ है। सलासिल यानी तरीक़त और एक सुन्नी ने जिसको पीर बनाया तो उस की अपनी एक तंज़ीम भी है जिससे जुड़ना इस पर गोया फ़र्ज़ है तो यहां वाज़ेह ताल्लुक़ है फिर अगर तंज़ीम नहीं भी है तो सिलसिला है ही गिरोहबंदी कर के बटवारा करने के लिए।

एक अहम वज़ाहत

ख़्याल रहे कि ये बातें उमूमी तौर पर की जा रही हैं और किसी एक दो को टार्गेट नहीं किया गया है लिहाज़ा अपने मन से इसे इधर उधर चस्पाँ ना करते हुए इन्साफ़ से काम लिया जाये और जो वाक़ई ऐसा है जैसा कि बयान किया गया है तो फिर इस उमूम का इतलाक़ वहां भी होगा।

हालाते पीर साहिबान

पीर साहिबान के हालात का क्या कहना, उनकी तो बात ही निराली है। सलासिल के नाम पर जो तक़सीम हुई है इस में उनके किरदार की भला कैसे नफ़ी की जा सकती है, ये तो मर्कज़ी किरदार अदा कर रहे हैं। उन्हें अवाम की असल हालत की ख़बर नहीं या जान कर अंजान बनते हैं पता नहीं। अवाम को किस चीज़ की ज़रूरत है, उनके दरमयान किन मौज़ूआत पर बात करनी है ये सब बातें एक तरफ़, उन्हें बस नारे लगाने हैं और फ़ुरूई इख़तिलाफ़ी मसाइल पर लोगों को भड़काना है। अगर किसी से उनका इख़तिलाफ़ है तो इस अंदाज़ से इस का रद्द करते हैं कि मानो वो इस्लाम से ही ख़ारिज हो गया। हमारे इलाक़े में ही ऐसा हुआ कि अवाम पहले अच्छी ख़ासी ज़िंदगी बसर कर रही थी लेकिन एक दो बार सालाना जलसों में ऐसे ही पीर साहिबान को दावत दे दी गई और इन्होंने आकर ऐसा बयान दिया कि इत्तिहाद चूर चूर हो गया। आपसी इख़तिलाफ़ात सुन्नीयों के दरमयान इतने बढ़ गए कि एक दूसरे को अपनी मस्जिदों से भगाने तक लगे, ये तक़सीम आख़िर क्यों हुई? साफ़ मालूम हो रहा है कि इस में पीर साहिबान का हाथ है वर्ना अवाम अहले सुन्नत तो मुत्तहिद है।

पीर साहिबान के जज़बाती बयानात

ये पीर हज़रात जलसों में जाते हैं और इनकी आमद का एक मतलब ये भी होता है कि जिस जलसे में तीन चार लाख का ख़र्च होना होता है तो उनकी तशरीफ़ आवरी के नाम पर वो ख़र्च और बढ़ जाता है, इस के बाद जब ये जलसे के स्टेज पर जल्वा-अफ़रोज़ होते हैं तो बयान के नाम पर नफ़रतें फैलाने का काम करते हैं। भोली-भाली अवाम ने लाखों रुपय क्या सिर्फ इसी लिए ख़र्च किए थे कि आप सुन्नीयों का ही रद्द करें? और वो भी इस अंदाज़ में कि लोग तर्जीहात को मुकम्मल तर्क कर के उन्ही चीज़ों में

लग जाएं? इन पीर साहिबान को इन बातों की बिलकुल फ़िक्र नहीं है, उन्हें बस अपने जज़बात से मतलब है। जो उन्हें अच्छा लगता है वो ये करते हैं, अवाम के लिए अच्छा क्या है वो उन्हें सोचने की फ़ुर्सत नहीं। जब तक पीर साहिबान ऐसे बयानात करेंगे, मुम्किन ही नहीं कि अहले सुन्नत में इत्तिहाद हो जाये। अवाम के नज़दीक पीर साहिबान का वो मर्तबा है कि जो बात इन्होंने इरशाद फ़र्मा दी गोया वो पत्थर की लकीर है और इस के मुक़ाबले में दुनिया-भर के उलमा भी आ जाएं तो उन्हें फ़र्क़ नहीं पड़ता। अब सोचें कि जब अवाम अहले सुन्नत के दिलों में पीर साहिबान के कहने पर किया-क्या हो सकता है। एक पीर साहिब ने अगर एक जलसे में किसी सुन्नी तंज़ीम का रद्द कर दिया तो अवाम अहले सुन्नत किसी आलिम की बात नहीं सुनती, कोई आलिम उन्हें बताने की कोशिश करे तो वो फ़ौरन कहते हैं कि क्या तुम पीर साहिब से ज़्यादा जानते हो? इन सारी बातों का मक़सद सिर्फ ये बताना है कि उनके कुछ बोलने से बहुत फ़र्क़ पड़ता है और इतना फ़र्क़ पड़ता है कि जो आग ये लगा देते हैं उसे बुझाना एक अर्से तक के लिए मुश्किल हो जाता है। अब फिर हम अपने सवाल को दोहराएँ कि सलासिल में बंटे हुए सुनी कब एक होंगे तो जवाब ये भी होगा कि जब तक इस तरह बयानबाज़ी होगी और ये करने वाले ख़ुद पीर साहिबान होंगे तो एक होना बहुत मुश्किल है।

अकाबिरीन ने दीन का काम कैसे किया

अकाबिरीने अहले सुन्नत ने अस्लन कोई तंज़ीम नहीं बनाई और कुछ तन्ज़ीमों की बुनियाद रखी भी तो मुरव्वजा तन्ज़ीमों से वो बिलकुल अलग थी, वहां ऐसी तक़सीम या गिरोहबंदी वाला मुआमला नहीं था। यही वजह है कि इन्होंने दीन का काम ज़बरदस्त अंदाज़ में किया और उन में इन्फ़िरादियत थी। ऐसी इन्फ़िरादियत कि जो जामेअ् थी। आजकल जो

इजतिमाईयत है इस में वो इन्फ़िरादियत है कि सफ़-ए-अहले सुन्नत में हर एक को मुनफ़रद करती जा रही है

फिर उसी की ज़रूरत है

आज भी ज़रूरत है कि अकाबिरीन का तरीक़ा अपनाया जाये। अगर हम इस के मुताबिक़ काम करेंगे तो इख़तिलाफ़ात की गुंजाइश बहुत कम रहेगी और जो इख़तिलाफ़ात होंगे वो भी तरीक़े से होंगे। वो नफ़रतों का सबब नहीं बनेंगे। अगर बन भी जाते हैं तो ज़्यादा देर तक नहीं टिकने वाले। इस को मज़ीद वाज़ेह करने के लिए मैं "टीम अब्दे मुस्तफ़ा ऑफिशियल" की मिसाल पेश करना चाहता हूँ। अगर आप ये नाम पहली बार सुन रहे हैं तो अर्ज़ कर दूं कि ये राक़िम उल-हरूफ़ की तंज़ीम है जो असलन तंज़ीम है ही नहीं। जी हाँ, ये मजाज़ी तौर पर एक तंज़ीम है लेकिन असल में ये बस एक काम करने वालों की टीम है। हम यहां इस की मिसाल समझाने के लिए पेश कर रहे हैं, इस की तारीफ़ के लिए नहीं। बिला-शुबा ऐसी और भी तंज़ीमें हैं जिन्हें बस तंज़ीम शनाख़ती तौर पर कहा जा सकता है। अब हमारा तरीक़ा क्या है वो देखें और फ़र्क़ को महसूस करें। सबसे पहले तो हम अपनी तंज़ीम में लोगों को शामिल करने और निकालने का काम नहीं करते यानी यहां ऐसे उसूलों की लंबी चौड़ी फ़हरिस्त नहीं है कि हमारी तंज़ीम में आने के लिए ये, ये और ये करना होगा और अगर ये, ये और ये किया तो हम आपको तंज़ीम से निकाल देंगे, ऐसा करने वाले आग़ाज़ में ही काम शुरू करने से पहले गिरोहबंदी शुरू कर देते हैं। हमारे पास मुआमला कुछ ऐसा है कि आने वाले के लिए बिस्तर हाज़िर और जानेवाले के लिए रास्ता...

तन्ज़ीमों का मुआमला कुछ ऐसा होता है कि वहां काम करने का मतलब है कि आपको उन्ही के साथ काम करना होगा, आप किसी दूसरी

तंज़ीम के लिए काम नहीं कर सकते और अगर किया तो फ़ौरी तौर पर आपको तंज़ीम से निकाल दिया जाएगा। अब हम किस तरह काम करते हैं वो मुलाहिज़ा फ़रमाएं, हमारे पास कोई भी सुन्नी आकर काम कर सकता है, जितना और जब चाहे कर सकता है। इस बात से आप अंदाज़ा लगाऐं कि हमारी टीम में जितने लोग काम करने वाले हैं सब किसी ना किसी तंज़ीम के मेंबर हैं और तो और कई ऐसे भी हैं कि जो ख़ुद तंज़ीम, मदारिस और इदारे वग़ैरा चलाते हैं लेकिन इस के बावजूद ये हमारी टीम के मेंबर हैं, यही तो अहले सुन्नत का वो हुस्न है जिसकी हम बात कर रहे हैं। हम कभी किसी को पाबंद नहीं करते और ना किसी की सलाहीयतों को अपनी मर्ज़ी और उसूलों तले दबाते हैं। फ़र्क़ को अगर और तफ़सील से बयान करूँ तो बहुत सारी बातें हैं। एक फ़र्क़ ये है कि मुरव्वजा तन्ज़ीमों में कोशिश ये की जाती है कि ज़्यादा से ज़्यादा लोगों को अपनी तंज़ीम में शामिल किया जाये लेकिन हमारा तरीक़ा ये है कि जो लोग जहां काम कर रहे हैं, वो वहीं काम करें बल्कि हमारी भी मदद ले लें अपने काम को आगे बढ़ाने के लिए लेकिन हमारी तंज़ीम में ना आएं। मेरे घर कुछ तन्ज़ीमों के मुबल्लग़ीन आए, सोशल मीडीया पर भी कई लोगों से राब्ता हुआ जिन्होंने कहा कि आप हमें अपनी तंज़ीम में रख लें, हमारा जवाब ये होता है कि आप काम करें, जहां कर रहे हैं वहां करें, हमारी टीम का हर सुन्नी एक रूक्न है, आप भी इस टीम में शामिल हैं, आप हमारे कामों में जिस तरह चाहें मदद कर सकते हैं, यहां भी दीन का काम होगा और आप कहीं और करेंगे तो भी दीन का काम होगा, हमारा असल मक़सद तो बस यही है। हम ऐसा क्यों करें कि आपको अपनी तंज़ीम के साथ ख़ासकर के आपकी असल उड़ान के आड़े आ जाएं? ये तो मुनासिब नहीं है कि किसी को हम अपने साथ काम करने के नाम पर ही बिठा कर रखें और इस का जितना काम हो वो हमारे साथ ही हो वर्ना ना हो। ये बहुत ग़ौर करने वाली बातें हैं

जो हम बयान कर रहे हैं। अहले सुन्नत में इत्तिहाद की कुंजी इन बातों में है

अगर तन्ज़ीमों ने फ़क़त अपनी अपनी छोड़कर ऐसा तरीक़ा इख़तियार कर लिया तो सब एक ही जगह दीन का काम करते नज़र आएँगे

अल्लाह त'आला हमें हिदायत पर क़ायम रखे और हम सब का ख़ातमा इसी पर फ़रमाए।

अब्दे मुस्तफ़ा
मुहम्मद साबिर क़ादरी

हमारी किताबें हिंदी में

(1) बहारे तहरीर - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल (अब तक चौदह हिस्से)
(2) अल्लाह त'आला को ऊपरवाला या अल्लाह मियाँ कहना कैसा?
- अ़ब्दे मुस्तफ़ा मुहम्मद साबिर क़ादरी
(3) अज़ाने बिलाल और सूरज का निकलना - अ़ब्दे मुस्तफ़ा मुहम्मद साबिर क़ादरी
(4) इश्क़े मजाज़ी (मुंतख़ब मज़ामीन का मजमुआ) - अ़ब्दे मुस्तफ़ा मुहम्मद साबिर क़ादरी
(5) गाना बजाना बंद करो, तुम मुसलमान हो! - अ़ब्दे मुस्तफ़ा मुहम्मद साबिर क़ादरी
(6) शबे मेराज गौसे पाक - अ़ब्दे मुस्तफ़ा मुहम्मद साबिर क़ादरी
(7) शबे मेराज नालैन अर्श पर - अ़ब्दे मुस्तफ़ा मुहम्मद साबिर क़ादरी
(8) हज़रते उवैस क़रनी का एक वाक़िया - अ़ब्दे मुस्तफ़ा मुहम्मद साबिर क़ादरी
(9) डॉक्टर ताहिर और वक़ारे मिल्लत - अ़ब्दे मुस्तफ़ा मुहम्मद साबिर क़ादरी
(10) ग़ैरे सहाबा में रदिअल्लाहु त'आला अन्हु का इस्तिमाल - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल
इस रिसाले में कई दलाइल से साबित किया गया है कि सहाबा के अलावा भी तरद्दी (यानी रदिअल्लाहु त'आला अन्हु) का इस्तिमाल किया जा सकता है।
(11) चंद वाक़ियाते कर्बला का तहक़ीक़ी जाइज़ा - अ़ब्दे मुस्तफ़ा मुहम्मद साबिर क़ादरी
(12) बिन्ते ह़व्वा (एक संजीदा तहरीर) - कनीज़े अख़्तर
(13) सेक्स नॉलेज (इस्लाम में सोहबत के आदाब) - अ़ब्दे मुस्तफ़ा मुहम्मद साबिर क़ादरी
(14) हज़रते अय्यूब अलैहिस्सलाम के वाक़िए पर तहक़ीक़
- अ़ब्दे मुस्तफ़ा मुहम्मद साबिर क़ादरी
(15) औरत का जनाज़ा - जनाबे ग़ज़ल साहिबा
(16) एक आशिक़ की कहानी अल्लामा इब्ने जौज़ी की ज़ुबानी
- अ़ब्दे मुस्तफ़ा मुहम्मद साबिर क़ादरी
(17) आईये नमाज़ सीखें (पार्ट 1)
- अ़ब्दे मुस्तफ़ा मुहम्मद साबिर क़ादरी
(18) क़ियामत के दिन लोगों को किस के नाम के साथ पुकारा जाएगा?
- अ़ब्दे मुस्तफ़ा मुहम्मद साबिर क़ादरी
(19) शिर्क क्या है? - अल्लामा मुहम्मद अहमद मिस्बाही
(20) इस्लामी तअ़लीम (हिस्सा अव्वल)
- अल्लामा मुफ़्ती जलालुद्दीन अहमद अ़मजदी रहमतुल्लाह अलैह
ये किताब इस्लाम की बुनियादी मालूमात पर मुश्तमिल है, बच्चों को पढ़ाने के लिये ये एक अच्छी किताब है।

(21) मुहर्रम में निकाह - अ़ब्दे मुस्तफ़ा मुहम्मद साबिर क़ादरी
(22) रिवायतों की तहक़ीक़ (पहला हिस्सा) - अ़ब्दे मुस्तफ़ा मुहम्मद साबिर क़ादरी
(23) रिवायतों की तहक़ीक़ (दूसरा हिस्सा) - अ़ब्दे मुस्तफ़ा मुहम्मद साबिर क़ादरी
(24) ब्रेक अप के बाद क्या करें? - अ़ब्दे मुस्तफ़ा मुहम्मद साबिर क़ादरी
(25) एक निकाह ऐसा भी - अ़ब्दे मुस्तफ़ा मुहम्मद साबिर क़ादरी
(26) काफ़िर से सूद - अ़ब्दे मुस्तफ़ा मुहम्मद साबिर क़ादरी
(27) मैं खान तू अंसारी - अ़ब्दे मुस्तफ़ा मुहम्मद साबिर क़ादरी
(28) रिवायतों की तहक़ीक़ (तीसरा हिस्सा) - अ़ब्दे मुस्तफ़ा मुहम्मद साबिर क़ादरी
(29) जुर्माना - अ़ब्दे मुस्तफ़ा मुहम्मद साबिर क़ादरी
(44) ला इलाहा इल्लल्लाह, चिश्ती रसूलुल्लाह? - अ़ब्दे मुस्तफ़ा मुहम्मद साबिर क़ादरी
(31) हैज़, निफ़ास और इस्तिहाज़ा का बयान बहारे शरीअत से
- अल्लामा मुफ़्ती अमजद अली आज़मी
(32) रमज़ान और क़ज़ा -ए- उमरी की नमाज़ - अ़ब्दे मुस्तफ़ा मुहम्मद साबिर क़ादरी
(33) 40 अहादीसे शफ़ाअत - आला हज़रत, इमाम अहमद रज़ा खान बरेलवी
(34) बीमारी का उड़ कर लगना - आला हज़रत, इमाम अहमद रज़ा खान बरेलवी
(35) ज़न और यक़ीन - आला हज़रत, इमाम अहमद रज़ा बरेलवी
(36) ज़मीन साकिन है - आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा खान बरेलवी
(37) अबू तालिब पर तहक़ीक़ - आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा खान बरेलवी
(38) क़ुरबानी का बयान बहारे शरीअत से - अल्लामा मुफ़्ती अमजद अली आज़मी
(39) इस्लामी तालीम (पार्ट 2) - अल्लामा मुफ़्ती जलालुद्दीन अहमद अमजदी
(40) सफ़ीना -ए- बख़्शिश - ताजुश्शरिया, अल्लामा मुफ़्ती अख़्तर रज़ा खान
(41) मैं नहीं जानता - मौलाना हसन नूरी गोंडवी
(42) जंगे बद्र के हालात इख़्तिसार के साथ
- मौलाना अबू मसरूर असलम रज़ा मिस्बाही कटिहारी
(43) तहक़ीक़े इमामत - आला हज़रत, इमाम अहमद रज़ा खान बरेलवी
(44) सफ़रनामा बिलादे ख़मसा - अ़ब्दे मुस्तफ़ा मुहम्मद साबिर क़ादरी
(45) मंसूर हल्लाज - अ़ब्दे मुस्तफ़ा मुहम्मद साबिर क़ादरी
(46) फ़र्ज़ी क़ब्रें - अ़ब्दे मुस्तफ़ा मुहम्मद साबिर क़ादरी
(47) इमाम अबू यूसुफ का दिफा - इमामे अहले सुन्नत, आ़ला हज़रत रहीमहुल्लाहु त'आला
(48) इमाम क़ुरैशी होगा - इमामे अहले सुन्नत, आ़ला हज़रत रहीमहुल्लाहु त'आला
(49) हिन्दुस्तान दारुल ह़रब या दरुल इस्लाम? - अ़ब्दे मुस्तफ़ा मुहम्मद साबिर क़ादरी
(50) वबा से फ़रार - इमामे अहले सुन्नत, आ़ला हज़रत रहीमहुल्लाहु त'आला
(51) रज़ा या रिज़ा - अ़ब्दे मुस्तफ़ा मुहम्मद साबिर क़ादरी

AMO

SABIYA
VIRTUAL PUBLICATION

enikah

niiii

BOOKS

PS
graphics

DONATE

ABDE MUSTAFA OFFICIAL

Abde Mustafa Official is a team from Ahle Sunnat Wa Jama'at working since 2014 on the Aim to propagate Quraan and Sunnah through electronic and print media. We're working in various departments.

(1) Blogging : We have a collection of Islamic articles on various topics. You can read hundreds of articles in multiple languages on our blog.
amo.news/blog

(2) Sabiya Virtual Publication
This is our core department. We are publishing Islamic books in multiple languages. Have a look on our library **amo.news/books**

(3) E Nikah Matrimonial Service
E Nikah Service is a Matrimonial Platform for Ahle Sunnat Wa Jama'at. If you're searching for a Sunni life partner then E Nikah is a right platform for you.
www.enikah.in

(4) E Nikah Again Service
E Nikah Again Service is a movement to promote more than one marriage means a man can marry four women at once, By E Nikah Again Service, we want to promote this culture in our Muslim society.

(5) Roman Books
Roman Books is our department for publishing Islamic literature in Roman Urdu Script which is very common on Social Media.

read more about us on **amo.news**
For futher inquiry: info@abdemustafa.in

SCAN HERE

PhonePe G Pay Paytm
9102520764

BANK DETAILS
Account Details :
Airtel Payments Bank
Account No.: 9102520764
(Sabir Ansari)
IFSC Code : AIRP0000001

or open this link | amo.news/donate

सलासिल में बंटे हुए सुन्नी कब एक होंगे?

A

Abde Mustafa Official is a team from Ahle Sunnat Wa Jama'at working since 2014 on the Aim to propagate Quraan and Sunnah through electronic and print media. We're working in various departments.

Blogging : We have a collection of Islamic articles on various topics. You can read hundreds of articles in multiple languages on our blog.

blog.abdemustafa.com

Sabiya Virtual Publication

This is our core department. We are publishing Islamic books in multiple languages. Have a look on our digital library **books.abdemustafa.com**

E Nikah Matrimonial Service

E Nikah Service is a Matrimonial Platform for Ahle Sunnat Wa Jama'at. If you're searching for a Sunni life partner then E Nikah is a right platform for you.**www.enikah.in**

E Nikah Again Service

E Nikah Again Service is a movement to promote more than one marriage means a man can marry four women at once, By E Nikah Again Service, we want to promote this culture in our Muslim society.

Roman Books

Roman Books is our department for publishing Islamic literature in Roman Urdu Script which is very common on Social Media.

read more about us on **www.abdemustafa.com**

For futher inquiry: info@abdemustafa.com

M O

AMO
ABDE MUSTAFA OFFICIAL

SABIYA
VIRTUAL PUBLICATION

ISBN (N/A)